चेतना विकास मूल्य शिक्षा

कक्षा – 2

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

ए. नागराज
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद)

लेखन
साधन भट्टाचार्य
श्री राम नरसिम्हन
कुमार संभव, सोम त्यागी
बी.आर. अग्रवाल, अंजनी कुमार
श्रीमती सुवर्णा योगेश

प्राक्कथन

मानवीय शिक्षा का प्राक्कथन एक आवश्यकता के रूप में हमें महसूस हुआ, क्योंकि यह पाठ्यपुस्तिका का उपक्रम पहली कक्षा से प्रस्तुत किया गया है। क्रम से परंपरागत होने तक सिलसिला बना ही रहेगा। सह अस्तित्व अपने स्वरूप में व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक–एक वस्तु जैसा परमाणु, अणु, ग्रह, गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा। डूबी, भीगी, घिरी होने के आधार पर नियंत्रण, क्रियाशीलता और उर्जा सम्पन्नता प्रत्येक वस्तु में नित्य प्रमाण के रूप में देखा गया है। साथ में यह भी समझा गया है कि व्यापक वस्तु में समाहित सम्पूर्ण एक–एक वस्तुओं की अविभाज्यता नित्य वर्तमान है। यही सह–अस्तित्ववादी विश्व–दृश्टिकोण का मूल रूप है। ऐसे सह अस्तित्व नित्य प्रभावी रहना स्वाभाविक है।

सह अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए प्रथम कक्षा से अर्थात् अक्षराभ्यास से चलकर शब्दों का अभ्यास और शब्दों के अभ्यास से अर्थ का अभ्यास, अर्थों के अभ्यास के तात्पर्य में हर शब्द किसी वस्तु का, क्रिया का अथवा फल–परिणाम का नाम है। ऐसा अर्थ इंगित होना ही शब्द से अर्थ समझा गया है इसलिए अर्थबोध करने के उपक्रम में शिक्षा विधा को अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्रस्तुत हुआ। यह पठन विधि से अर्थ बोध तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसे प्रस्तावित करना इसलिए आवश्यक समझा गया कि मानव सह–अस्तित्व विधि से ही समुदाय चेतना से मानव चेतना में संतुलित होना है। मानव चेतना का प्रयोजन, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीने का प्रमाण है। इससे अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की पहचान होना स्वाभाविक है।

यह तो सटीक है कि विगत विधि से जो पाठ–पठन का लक्ष्य था, उसे आगे पढ़ाने के जिन भी उपायों को खोजा गया है, वह सब सार्थक है, मूलतः मानवीय शिक्षा के अभाव वश सामुदायिकता, मतभेद, साम, दाम, दण्ड, भेद, परस्पर समुदायों की निहित अतिशोधों का विश्वास प्रयोग हो चुका है। इन सब अभिशापों से मुक्ति पाने की अकांक्षा मानव में निहित होना भी पाया गया। इसलिए मानवीय शिक्षा का निश्चयीकरण आवश्यक समझा गया है। इसे क्रियान्वयन करने की क्रमविधि से प्रस्तुत किया। मानवीय शिक्षा में मानव का अध्ययन प्रधान उद्देश्य को सार्थक बनाने के क्रम में प्रथम कक्षा से ही सूत्रपात रूप में मूल्य संबंधी और शरीर के अवयव संबंधी शब्दों का अधिकतम चयन किया गया है। साथ में परस्पर मानव संबंधों से संबंधित शब्दों का चयन किया गया है। इसे हर बालक अथवा किशोर आसानी से पहचान पायेगा। ऐसी हमारी स्वीकृति है। यह सार्थक और सफल होना पाया गया है। भविश्य में मूल्यांकन होता रहेगा। इस विधि से सर्व शुभ होने की कामना है।

ए. नागराज
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद)
श्री नर्मदाचंद, भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

भूमिका

विज्ञान शिक्षा से छात्र–छात्राओं एवं युवाओं में तर्क शक्ति का अभूतपूर्व विकास हुआ है। जिससे आस्था (बिना जाने मान लेना) की प्रवृत्ति में कमी आई है। अतः परंपरागत शैली जिसमें यह करो, यह न करो अथवा ''ऐसा जीना चाहिए'' आदि उपदेश विद्यार्थियों में अब प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे में परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी शिक्षा के सार्वभौम स्वरूप पर चिंतन की आवष्यकता है।

यूनेस्को .... द्वारा अपेक्षित शिक्षा के चार स्तम्भों में मुख्य स्तम्भ .... अर्थात् ''साथ–साथ जीना सीखना'' पर जोर दिया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने मानव मूल्य शिक्षा हेतु निम्न मार्गदर्शन दिया है –

1. पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार के अंधविष्वास, कर्मकाण्ड व पूजन पद्धति से मुक्त हो।
2. पाठ्यक्रम रहस्यवाद, सम्प्रदायवाद व व्यक्तिवाद से मुक्त हो।
3. पाठ्यक्रम ''करो न करो'' आदि उपदेश न होकर तर्कपूर्ण हो, तर्कपूर्ण ढंग से इसका प्रयोग एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते हो।
4. पाठ्यक्रम को आचरण में प्रमाणित किया जा सकता हो।
5. पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हो।

आधुनिक शिक्षा को रोजगारोन्मुखी ही नहीं बल्कि परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी भी होने की आवश्यकता है, ताकि हर परिवार समाधान, समृद्धिपूर्वक जी सके। समाधान का अर्थ मानव संबंधों में परस्पर तृप्ति एवं प्रकृति के साथ संतुलनपूर्वक जीना है। समृद्धि अर्थात् अभाव–मुक्त जीना इस आशा की पूर्ति के लिए मानवीय मूल्यों के शिक्षक की आवश्यकता महसूस की जाती रही है।

मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) उपरोक्त सभी कटौतियों को पूरा करता है, जिसका परिचय ''जीवन विद्या शिविरों'' के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। मध्यस्थ दर्शन से विस्तृत चेतना विकास मूल्य शिक्षा मानव में पाँच सद्गुणों को सुनिश्चित करती है :–

1. स्वयं में विश्वास
2. श्रेष्ठता का सम्मान
3. प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन
4. व्यवसाय में स्वालंबन
5. व्यवहार में सामाजिकता

आज धरती एक गाँव .... हो गयी है। अतः विश्व शांति हेतु वैश्विक नागरिक .... अर्थात् सार्वभौम मानवीय आचरण को पहचानने की आवश्यकता है। चेतना विकास मूल्य षिक्षा के प्रकाष में सार्वभौम मानवीय आचरण, सार्वभौम मानवीय शिक्षा, सार्वभौम मानवीय व्यवस्था, सार्वभौम मानवीय संविधान का व्यावहारिक स्वरूप व्याख्यायित होता है। साथ ही ''मानव में समानता'' व धर्म निरपेक्षता का व्यावहारिक स्वरूप प्रकट होता है जिससे ''मानव जाति एक, मानव धर्म एक'' पूर्वक जीने की राह प्रषस्त होती है।

विश्व के इतिहास में शायद पहली बार हुआ है कि संपूर्ण दर्शन को प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर पहुंचाया गया हो। राज्य शासन ने कक्षा 10 वीं तक अध्ययन करने वाले सभी बच्चों को सहअस्तित्व का महत्व इस दर्शन के माध्यम से सिखाने का निर्णय लिया है। यह पुस्तक इसी प्रयास का एक भाग है। हम आशा करते हैं कि शिक्षक स्वविवेक के साथ इस पुस्तक का उपयोग करके इस महती उद्देश्य की पूर्ति करेंगे। जाहिर है आपके सुझावों का हमें हमेशा इंतजार रहेगा।

नंद कुमार (भा.प्र.से.)
संचालक

लेखकीय

प्रत्येक शिशु जन्म से ही न्यायापेक्षी, सही कार्य–व्यवहार करने वाला एवं सत्य वक्ता होता है, परन्तु न्याय, सही कार्य–व्यवहार एवं सत्य से शिशु अनभिज्ञ रहता है। इन्हें समझने के लिए वह परम्परा पर, मुख्यतः शिक्षा परम्परा पर आश्रित रहता है। इस हेतु आज्ञापालन, अनुसरण, अनुकरण एवं जिज्ञासा सम्पन्न रहता है।

प्राथमिक कक्षा में प्रवेश के पूर्व ही सभी शिशु अपनी मातृभाषा को समझने व बोलने की योग्यता से सम्पन्न होते हैं एवं अपने परिवेश के प्रायः सभी कार्य–व्यवहार व वस्तुओं को पहचानते हैं। अपने परिवेश के अनुसार मान्यता व विचार संपन्न रहते है।

विद्यालय में प्रवेश के साथ शिक्षा में अक्षर, शब्दों एवं अंको को पहचानने व लिखने का कार्य शिक्षा की प्रमुख वस्तु होती है जबकि सभी विद्यार्थी अनेक वाक्यों को बोलने, अनेक वाक्य बनाने में समर्थ रहते हैं। उनकी इस पूर्व योग्यता को बढ़ाने के लिए शिक्षा में स्पश्ट कार्यक्रम का अत्याभाव है। फलतः शिक्षा में पर्याप्त रूचि नहीं बनती। इसी के साथ प्राथमिक स्तर पर स्वयं पढ़कर समझने–सीखने की योग्यता अधिकांश विद्यार्थियों में विकसित नहीं होती है और वे अधिकांशतः शिक्षक पर ही आश्रित रहते हैं। इसे पूरा करना ही शिक्षक की सार्थकता है।

अस्तु विद्यार्थियों की योग्यता के अनुसार मानवीय चेतना विकसित करने हेतु एवं शिक्षकों की सार्थकता प्रमाणित होने के उद्देश्य से 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के पाठ्यपुस्तकों को लिखा गया है।

हमें विश्वास है यह पुस्तक इन अर्थों को प्राप्त करने में सफल होगा।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा की पुस्तक प्रथम बार लिखी गई है अतः इसमें सुधार की अपार सम्भावनाएँ हैं। विद्वान अध्यापकगणों से इस हेतु सतत् मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

लेखकगण

प्रथम संस्करण की भूमिका

चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर कक्षा 1 से 5 तक पुस्तक 2009 में लिखी गई।

प्रथम बार पुस्तक लिखने तथा अल्प समय में इसे पूरा करने के कारण व्याकरण संबंधी एवं टंकण संबंधी भूल भी रही। कक्षा 1 से सभी पाठ कविता में हैं एवं कविता में तुकबंदी का अभाव था।

प्रथम संस्करण में शिक्षा की वस्तु को यथावत रखते हुये व्याकरण में सुधार किया गया है एवं कविताओं में तुकबंदी पर थोड़ा ध्यान दिया गया है। कुछ तकनीकी से संबंधित पाठों को हटा दिया गया है।

हमें विश्वास है पुस्तक विद्यार्थियों के लिए सुबोध हेगा।

लेखकगण

अनुक्रमणिका

भाग	पाठ	नाम	पृ. संख्या
1) मानव लक्ष्य	पाठ 1	मानव लक्ष्य	
2) समग्र व्यवस्था	पाठ 2	अस्तित्व	
	पाठ 3	पदार्थ अवस्था	
	पाठ 4	प्राणावस्था	
	पाठ 5	जीवावस्था	
	पाठ 6	ज्ञानावस्था	
3) अखण्ड समाज	पाठ 7	परिवार	
	पाठ 8	मानव संबंध	
	पाठ 9	मानव समाज	
	पाठ 10	मेरा विद्यालय	
	पाठ 11	गुरू–शिष्य संबंध	
	पाठ 12	हमारी आवश्यकता	
	पाठ 13	जानना	
	पाठ 14	उत्सव	
	पाठ 15	व्यवसाय	
	पाठ 16	ऋतु	
	पाठ 17	शरीर	
	पाठ 18	आहार	
	पाठ 19	औषधि	

वंदना

वंदना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की।।
कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरंतरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी।
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी ।।
श्रद्धा समर्पित जिनसे आए, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना ।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना।।
पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा ।
जिनमें है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

–प्रदीप पूरक, बिजनौर (उ.प्र.)

पाठ – 1

मानव लक्ष्य

मै मानव संतान हूॅं।
मै सुखी होना चाहता/चाहती हूॅं।
मै प्रसन्न रहना चाहता/चाहती हूॅं।
हर मानव सुखी होना एवं प्रसन्न रहना चाहते है।
मैं समझना चाहता/चाहती हूॅं।
समझने पर मैं सुखी और प्रसन्न होता/होती हूॅं।
मै अपने शरीर को समझना चाहता/चाहती हूॅं।
मै अपनी क्षमताओं को समझना चाहता/चाहती हूॅं।
मै अपने आस–पास की वस्तुओं को समझना चाहता/चाहती हूॅं।
सभी मानव ऐसा ही चाहते हैं।
समझकर ही मानव समझदार मानव कहलाता है।
मै समझदार बनना चाहता/चाहती हूॅं।
हर मानव समझदार हो ऐसा मैं चाहता/चाहती हूॅं।
हर मानव समझकर ही निरंतर सुख पूर्वक जी सकता है।
यही मानव की मूल चाहत हैं।
यही मानव लक्ष्य हैं।

पाठ – 2

आस्तित्व

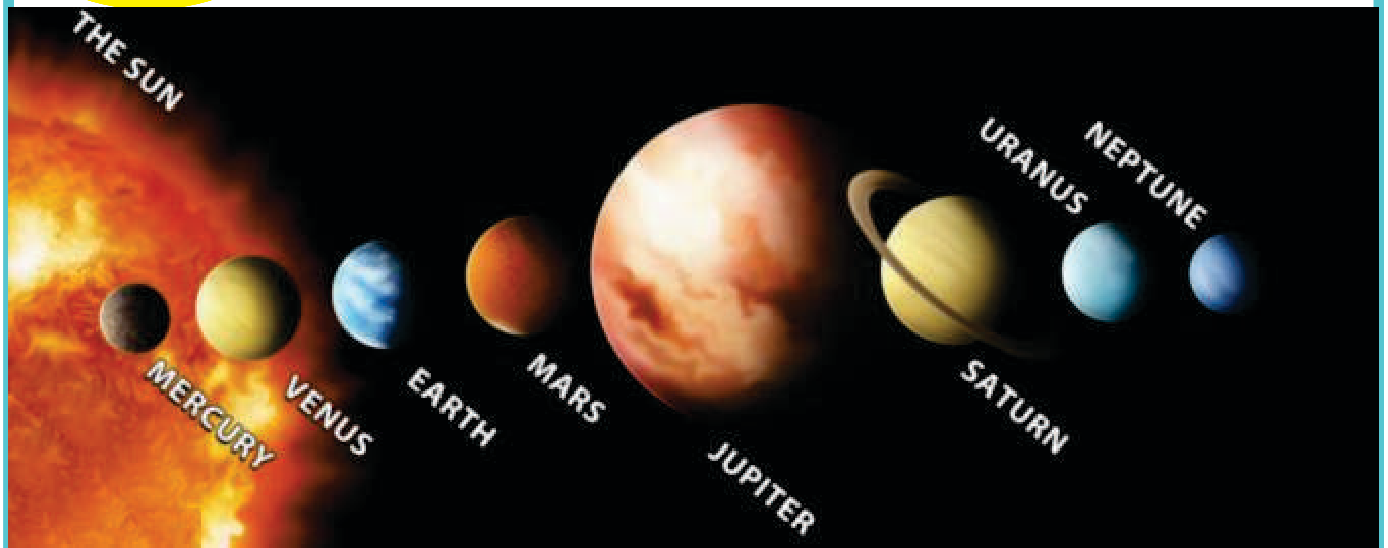

मेरे ऊपर आकाश दिखाई देता हैं।
आकाश में रात्रि में बहुत सारे तारे दिखाई देते हैं।
इतने ज्यादा तारे है कि हम उन्हें गिन नहीं पाते।
आकाश असीम हैं, इसका कोई ओर–छोर नहीं हैं।
आकाश का कोई किनारा नहीं हैं, कोई सीमा नहीं हैं।
आकाश में जितना भी आगे बढ़ते जाते हैं, आगे आकाश ही दिखाई देता है।
आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और बहुत सारे तारे हैं।
सूर्य पूर्व दिशा से निकल कर पश्चिम दिशा में छिपता हुआ दिखाई देता हैं।
ऐसा प्रतिदिन होता हैं। यह नियम हैं।
नियम में कभी बदलाव नहीं होता।
आकाश में सूर्य अन्य ग्रहो के साथ हैं।
इसमें हमारी पृथ्वी, बुध, शुक्र आदि ग्रह हैं।
इन सबको एक साथ सौर परिवार कहते हैं।
हम पृथ्वी पर रहते हैं।
पृथ्वी पर समुद्र, पहाड़, नदी, नाले, वन और खेत है।
पृथ्वी पर मनुष्य, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे और मिट्टी–पत्थर, वायु–जल साथ–साथ हैं।
होने का नाम अस्तित्व हैं।
साथ–साथ होना सह–अस्तित्व है।

पाठ – 3

पदार्थ अवस्था

पृथ्वी पर मिट्टी, पत्थर, वायु, जल, पेड़–पौधें, पशु–पक्षी और मनुष्य पाये जाते है। मिट्टी–पत्थर, वायु और जल को पदार्थ अवस्था कहते है। धरती की सतह पर मिट्टी, पत्थर और जल पाया जाता है। वायु धरती की सतह के ऊपर पाया जाता है। मिट्टी अनेक प्रकार की होती हैं जैसे लाल, पीली, सफेद और काली मिट्टी। पत्थर अनेक प्रकार के होते हैं जैसे चूना पत्थर, लोहा पत्थर, संगमरमर, फर्शी पत्थर आदि।

धरती पर मीठा और खारा (नमकीन), ये दो प्रकार के पानी में मिलते है। मीठा पानी पीने के लिए उपयोग किया जाता हैं। नदी और तलाब में मीठा पानी रहता हैं। समुंद्र में खारा पानी पाया जाता हैं। इससे नमक बनाया जाता हैं। इसे पीने के लिए उपयोग नहीं किया जाता हैं। धरती की सतह पर ऊंचे स्थानो को पर्वत या पहाड़ कहते हैं। पहाड़ो से नदियॉ निकलती हैं। नदियॉ समुद्र में मिल जाती हैं। नदियॉ ढाल की ओर बहती हैं। पानी भी ढाल की ओर बहता हैं। सभी तरल ढाल की ओर बहते हैं। यह नियम हैं। यह हमेंशा एक जैसा रहता हैं। नियम में कभी भी परिवर्तन नहीं होता।

पाठ – 4

प्राणावस्था

वृक्ष

पेड़–पौधों को प्राणावस्था कहते हैं। पेड़–पौधे को वनस्पति भी कहते है। ये चार प्रकार के होते हैं (1) वृक्ष (2) झाड़ी (3) बेल या लता और (4) घास या शाक।

कुछ पेड़–पौधे बहुत बड़े होते हैं और कई वर्षो तक जीवित रहते हैं। इन्हें वृक्ष कहते हैं। जैसे आम, नीम, पीपल, बरगद, ऑवला, कटहल आदि।

झाड़ी

वृक्षो से छोटे पौधो को झाड़ी कहते है– करौंदा, नींबू, गुड़हल, गुलाब झाड़ी है। दुसरे बड़े पौधों के सहारे बड़ने पौधो को बेल या लता कहते हैं। जैसे – लौकी, कुम्हड़ा, सेम, तरोई, करेला आदि।

लता

बहुत छोटे पौधों को हम घास या शाक कहते हैं जैसे सरसों, राई, मटर, चना, मूंग, पालक, मेथी, धनिया आदि।

पेड़–पौधे में जड़, तना, शाखा, पत्ती, फूल, फल और बीज ये सात अंग होते हैं। बीज से पौधे उगते हैं। नीम के वृक्ष के बीज का नीम का ही पौधा उगता हैं, कभी भी आम का पौधा नहीं उगता। इसी प्रकार नींबू के बीज से नींबू का, सेम के बीज से सेम का पौधा उगता हैं। यह निश्चित होता हैं। इसे व्यवस्था कहते हैं। इसी प्रकार आम के वृक्ष में बसंत ऋतु में बौर (फूल) आते हैं एवं गर्मी के अंत में फल पककर बीज तैयार होता हैं। ऐसा हर वर्ष होता हैं।

इस प्रकार नींबू व अन्य पेड़–पौधे में भी होता हैं। प्रत्येक पेड़–पौधे का आचरण निश्चित होता हैं। प्रत्येक पेंड़–पौधे व्यवस्था में होते हैं।

घास या शाक

पाठ – 5

जीवावस्था

पृथ्वी पर अनेक प्रकार के पशु–पक्षी पाये जाते हैं। पशु – पक्षियों को हम जीव अवस्था भी कहते हैं।

धरती पर रहने वाले पशुओं को हम भू–चर कहते हैं। जैसे गाय, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली, हिरण, बाघ, सिंह, भालू, बंदर आदि।

आकाश में उड़ने वाले पक्षियों को हम नभ – चर कहते हैं। इन्हें खेचर भी कहते हैं। तोता, मैना, कौआ, गिद्ध, उल्लू ये सब नभचर या खेचर हैं।

पानी में रहने वाले जीव जलचर कहलाते है। पशु – पक्षियों में से कुछ को मनुष्य पालते हैं। इन्हें पालतू पशु–पक्षी कहते हैं। जैसे गाय, भैंस, कुत्ता, घोड़ा, गधा, मैना, तोता आदि, अनेक पशु–पक्षी वन में रहते हैं। इन्हें पाला नहीं जाता। जैसे बाघ, भालू, सियार, भेड़िया, लकड़बग्घा आदि।

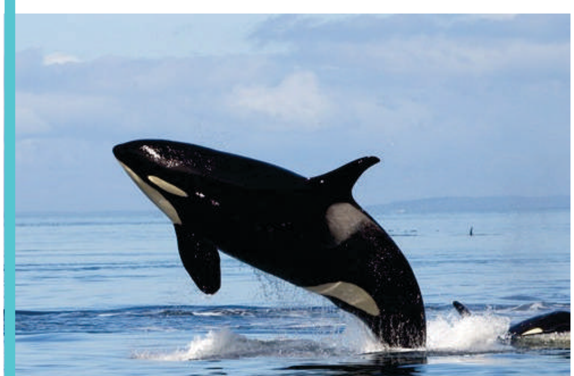

गाय घास खाती हैं घोड़ा भी घास खाता हैं। घास खाने वाले जीव शाकाहारी कहलाते हैं। जैसे गाय, घोड़ा, गधा, भैंस, हिरण, खरगोश आदि।

मांस खाने वाले जीव मांसाहारी कहलाते हैं। जैसे – बाघ, सिंह, भेंड़िया, सियार आदि।

गााय हमेशा घास खाती हैं। बाघ हमेशा मांस ही खाता हैं। गाय एवं सभी शाकाहारी पशु होठ से पानी पीते हैं। बाघ, चीता, सिंह आदि सभी मांशाहारी पशु जीभ से चाटकर पानी पीते हैं।

पाठ – 6

ज्ञानावस्था

इसके पहले के पाठो में हम पदार्थ अवस्था, प्राण अवस्था और जीव अवस्था के बारे में समझे हैं। इस पाठ में हम ज्ञानावस्था को समझेंगे।मानव ज्ञानावस्था में आता हैं। सभी मानव सूखी होना चाहते हैं। प्रत्येक मानव समझकर सुखी होता हैं। सभी मानव का लक्ष्य सुखी होना हैं। सभी मानव का लक्ष्य समान हैं।

प्रत्येक स्वस्थ मानव शरीर में दो हाथ, दो पैर, दो ऑखे, दो कान, एक मुॅह, एक नाक, एक सिर होता हैं।

प्रत्येक स्वस्थ मानव शरीर में पॉच ज्ञानेन्द्रियॉ एवं पॉच कर्मेन्द्रियॉ होती हैं। सभी मानव की रचना एक समान होती हैं। सभी मानव कल्पना करते हैं।

हम सभी मित्रो के साथ खेलने की कल्पना करते हैं। हम सभी माता–पिता के साथ रहने और घुमने की कल्पना करते हैं। गाय शब्द सुनकर हम एक पशु की कल्पना करते हैं। खिलाड़ी शब्द सुनकर खेलने वाले व्यक्ति की कल्पना करते हैं। सहयोगी शब्द सुनकर हम साथ में कार्य करने की कल्पना करते हैं। हम सभी कल्पना करते है। हम जितना चाहे उतनी कल्पना कर सकते है। सभी मानव ऐसा कर सकते हैं।

हम लिखने की कल्पना करते हैं एवं हाथ से लिखते हैं। हम बोलने की कल्पना करते हैं एवं मुॅह से बोलते हैं। हम शरीर के द्वारा अपनी कल्पना को साकार करते हैं। सभी मनुष्य शरीर द्वारा कल्पना को साकार करते हैं।

पाठ – 7

परिवार

हम परिवार में रहते हैं। परिवार में माता – पिता, भाई – बहन, दादा – दादी और काका – काकी सभी साथ – साथ रहते हैं। परिवार में माता – पिता और सभी बड़े हमारा पालन – पोषण करते है। खाना, पीना, चलना, हम सभी परिवार में सीखते हैं। हम सभी परिवार में ही भाषा सीखते हैं।

परिवार में सभी एक दुसरे का सहयोग करते हैं। माता – पिता बड़े – बुजुर्गों की सेवा करते हैं और छोटे बच्चो की भी देखभाल करते हैं। कोई अस्वस्थ होता है तब उसकी सेवा करते है।

परिवार में छोटे बच्चें बड़ो का कहना मानते हैं और बड़ो के समझाए अनुसार चलते हैं। हम बड़ो के साथ रहकर सेवा करना सीखते हैं।

माता – पिता और सभी बड़े भोजन, वस्त्र, रहने का स्थान एवं आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध करते हैं। हम सभी का भोजन परिवार में बनता हैं।

परिवार में हम सभी साथ – साथ जीते हैं।
परिवार में जीना हमें अच्छा लगता हैं।

पाठ – 8

मानव सम्बन्ध

हम सभी परिवार में जीते हैं।
परिवार में माता, पिता, भाई और बहन सम्बन्ध होते हैं।

इस कक्षा में हम माता के सम्बन्ध को समझेंगे।

मेरी माता तुम हो सच्ची, मेरी माता तुम हो अच्छी।
मेरी माता मन की अच्छी, मेरी माता तुम हो सच्ची।।

रोज सबेरे उठती हो, दिनभर सेवा करती हो।
भोजन तुम्ही पकाती हो, भोजन तुम्ही कराती हो।।

नेक सलाह तुम देती हो, बिगड़े सारे सुलझाती हो।
काम सभी तुम करती हो, काम सभी सीखलाती हो।।

लिखना पढ़ना तुमसे सीखूँ, अच्छी बातें सब मैं जानूँ।
जीने के ढंग तुमसे सीखूँ, सदा तुम्हारा कहना मानूँ।।

मेरी माता तुम हो सच्ची, मेरी माता तुम हो अचछी।
मेरी माता मन की अच्छी, मेरी माता तुम हो सच्ची।।

पाठ – 9

मानव समाज

हम सभी परिवार में रहते है। परिवार में माता – पिता, भाई – बहन, दादा – दादी, काका – काकी के साथ रहते हैं।

परिवार के अलावा भी बहुत सारे लोग हमारे साथ रहते हैं। उन सबको हम समाज कहते हैं। संसार के सभी लोगो को एक साथ मिलाकर समाज कहते हैं।

हम विद्यालय में पढ़ते हैं। विद्यालय समाज का एक भाग होता है। अनेक परिवारों से विद्यार्थी विद्यालय में पढ़ने आते हैं। कई परिवार से लोग आकर विद्यालय भवन का निर्माण करते है, उसकी टूट–फूट को ठीक करते हैं एवं उसकी सफाई का ध्यान रखते हैं।

विद्यालय में अध्यापक एवं अध्यापिका विद्यार्थीयों को पढ़ाते, लिखाते एंव समझाते हैं। विद्यार्थीयों को खेलकूद एवं व्यायाम भी सिखाते हैं। विद्यालय में समय–समय पर उत्सव भी होते हैं। उत्सव में सभी विद्यार्थी एवं अध्यापकगण मिलकर अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करते हैं एवं सभी को प्रसन्न करते हैं।

पाठ – 10

मेरा विद्यालय

मेरे घर से थोड़ी दूर पर विद्यालय है। मैं नियमित विद्यालय जाता/जाती हूँ। मैं विद्या–अध्ययन करने के लिए विद्यालय जाता हूँ

विद्यालय में कई कक्षाएँ एवं अनेक शिक्षक और शिक्षिकाएँ है। हम सभी विद्यार्थी सभी शिक्षकों को अध्यापक जी कहकर सम्बोधित करते हैं एंव शिक्षिकाओं को अध्यापिका जी कहकर सम्बोधित करते हैं। हम सभी सहपाठियों को भैया जी एवं बहन जी कहकर सम्बोधित करते हैं।

विद्यालय के सभी सहपाठी पढ़ने, लिखने, सीखने एवं समझने में एक–दूसरे का सहयोग करते हैं।

घर में माता पिता हमारी देखभाल करते हैं और विद्यालय में अध्यापक जी एवं अक्ष्यापिका जी हमारा देखभाल करते हैं।

घर में माता–पिता अभिभावक हैं। विद्यालय में अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी हमारे अभिभावक हैं।

पाठ – 11

गुरू–शिष्य सम्बन्ध

विद्यालय में हम पढ़ने एवं समझने जाते हैं।

अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी हमें पढ़ाते है और समझाते हैं।

हम लोग अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी के शिष्य–शिष्या हैं।

हम अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी से समझते और सीखते हैं।

मैं सच्चाई को समझना चाहता/चाहती हूँ, अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी मुझे सच्चाई को समझाते हैं। अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी हमें वायु–जल–थल, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और मानव के बारे में समझाते हैं।

अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी हमें शब्दों का उच्चारण सिखातें हैं। अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी हमें चित्र बनाना, लिखना एवं वाक्य रचना सिखातें हैं।

अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी हमें शरीर की सफाई करना सिखाते हैं।

अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी हमें सही जीना समझाते हैं।

मैं अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी की आज्ञा का पालन करता/करती हूँ।

मैं अध्यापक जी एवं अध्यापिका जी जैसा समझदार होना चाहता हूँ।

पाठ – 12

हमारी आवश्यकता

हम सभी परिवार एवं समाज में जीते हैं। परिवार और समाज में निर्वाह करने के लिए अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती हैं।

भूख मिटाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती हैं। प्यास मिटाने के लिए पानी पीते हैं। ठण्ड से बचने के लिए कपड़े, वर्षा से बचने के लिए छाता एवं बरसाती कपड़े की आवश्यकता होती हैं। घर में रहकर हम आंधी, वर्षा, ठण्ड एवं गर्मी से बचते हैं।

इस प्रकार हम समझते हैं की भोजन, वस्त्र एवं मकान से हमारे शरीर की सुरक्षा होती हैं। येह मारे शरीर के लिए आवश्यक वस्तुएँ हैं।

पैरो से चलकर हम आसपास के घरो में जाते हैं। कुछ दूर जाना हो तो सायकल में बैठकर जाते हैं। एक साथ कई व्यक्तियों को जाना हो तो रिक्शा, तांगा या बैलगाड़ी में बैठकर जाते हैं। अधिक दूरी तक यात्रा करनें के लिए बस, कार या रेलगाड़ी का उपयोग करते हैं। पानी में यात्रा करने के लिए नाव एवं अन्य जलयान का उपयोग करते हैं। दूर देशों की यात्रा के लिए वायुयान का उपयोग होता हैं। विमान एवं हेलीकाप्टर वायुयान कहलाते हैं।

दूर की ध्वनी सुनने के लिए रेडियों होता हैं। दूर रहने वाले सम्बन्धियों से बात करने के लिए दूरभाष का उपयोग करते हैं, जैसे टेलीफोन यंत्र या मोबाईल फोन यंत्र। दूर के दृष्य देखने के लिए हम दूरदर्शन यंत्र का उपयोग करते हैं, जैसे टेलीविजन।

समाज निर्वाह करने के लिए दूरगमन, दूरश्रवण एवं दूरदर्शन यंत्रों की आवश्यकता होती हैं।

पाठ – 13

जानना

मैं स्वयं के चारों ओर की वस्तुओं को जानना चाहता/चाहती हूँ। जिस वस्तु को देखता और पहचानता/पहचानता हूँ उसे जानने की इच्छा होती है। मुझे मिट्टी पत्थर, पेड–पौधे, पशु–पक्षी, आकाश एवं ग्रहों को जानने की इच्छा होती हैं। जानकर मुझे प्रसन्नता होती है। मैं जिनके साथ जीता/जीती हूँ उनकी अच्छाईयों को जानना चाहता हूँ। मै अपने क्षमताओं को जानना चाहता/चाहती हूँ। मै किस प्रकार से सुखी होऊँगा, यह भी जानना चाहता/चाहती हूँ।

दुसरों लोग भी मेरे अच्छाईयों को जानना चाहते है। एक दूसरे की अच्छाईयों को जानकर साथ–साथ जीने में प्रसन्नता होती है।

सभी मनुष्य जानना चाहते है क्योकि सभी मनुष्य ज्ञानावस्था में है।

पाठ – 14

उत्सव

प्रसन्नता से भरे जाते, वह क्षण होता है उत्सव ।
हर क्षण उत्सव में जीऊँ, जीवन में हो नित उत्सव।।1।।

अंधकार दूर हटाकर, सूरज आ लाता उत्सव।
अंधकार दूर हटाकर, पूर्ण चन्द्र भी लाए उत्सव।।2।।

ठंडी की ठिठुरन बीती, बसन्त ऋतु ले आए उत्सव।
अब है झुलसाती गर्मी, खेल कूद का ये उत्सव।।3।।

घर लाकर फसल रखते, इसका भी करते उत्सव।
सम्बन्ध में अपना जीना, हो जाता है नित उत्सव।।4।।

पाठ – 15

व्यवसाय

परिवार एवं समाज में जीते हुए अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती है। इनमें से अधिकांश वस्तुओं को मानव बनाता है। जैसे कुर्सी बनना, कपडा बनाना, मकान बनाना भोजन बनाना इन सभी कार्यों को सम्मिलित नाम व्यवसाय है।

श्रम से सारे व्यवसाय होते है। व्यवसाय कई प्रकार के होते है। कृषि, पशुपालन, वस्त्र निर्माण, भवन निर्माण, औषधि निर्माण, लौह एवं इस्पात उद्योग, बर्तन निर्माण, कागज निर्माण दूरदर्शन यंत्र निर्माण, यातायात के साधनों को निर्माण, अलग–अलग व्यवसायों के नाम है। सफाई करना एवं वस्तुओं को सुधार करना भी व्यवसाय है। प्रत्येक परिवार एवं मानव समाज के लिए भी व्यवसाय अनिवार्य है। व्यवसाय में भागीदारी करके ही प्रत्येक मानव सुखी होता हैं।

पाठ – 16

ऋतु

क्रम से आए ऋतुएँ सारी।
वर्षो से ये आती जाती।।1।।

आने को क्रम इनका निश्चित।
फल भी होता इनका निश्चित।।2।।

दो मास की होती ऋतुएँ।
गणना में छः होती ऋतुएँ।।3।।

हुआ आगमन अब ऋतु बसंत।
तीखी सर्दी को आया अंत।।4।।

लम्बे दिन है छोटी रातें।
ग्रीष्म ऋतुओं को हम पहचानने।।5।।

आसमान में काले बादल।
धरती में ऋतु वर्षा को जल।।6।।

वर्षा गई नमी ऋतु आई।
शरद में फसल लहराई।।7।।

सुखद शरद को हुआ अंत।
ठण्डी लाया है ऋतु हेमंत।।8।।

दिन छोटा लम्बी ठण्डी रात।
अंतिम है शिशिर ऋतु की बात।।9।।

पाठ – 17

शरीर

मैं शरीर द्वारा कल्पना को साकार करता/करती हूँ। सिर, पैर, नाक, कान, मुँह, हाथ ये शरीर के अंग है। शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं– आँख, नाक, कान, जीभ एवं त्वचा।

नाक के द्वारा हम गन्ध को पहचानते है। कान द्वारा हम ध्वनि और शब्दों को पहचानते है। आँख द्वारा वस्तुओं के आकार और रंग को पहचानते है। जीभ के द्वारा स्वाद एवं त्वचा से स्पर्श कर पहचानते हैं।

शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियों है – मुँह, हाथ, पैर, मूत्रेन्दिय एवं गुदा।

मुँह से बोलते है, हाथों से कार्य करते है एवं पैरों से चलते है। मूत्रेन्दिय से मूत्र एवं गुदा से मल का त्याग करते हैं।

हम मुँह से भोजन करते है। मुँह में चबाया हुआ भोजन पेट में जाता है। चबाया हुआ भोजन पेट में पचता हैं। पाचन क्रिया से बनने वाले रस से शरीर को शक्ति मिलती है। पाचन से शेष सामग्री मल के रूप में शरीर से बाहर निकल जाता हैं। हम अधिक पानी पीते है तो अधिक मूत्र बनता हैं।

उचित समय पर उचित मात्रा में भोजन, पानी, व्यायाम, और विश्राम से शरीर स्वस्थ रहता है। स्वस्थ रहने पर हम सबका सहयोग कर पाते हैं एवं प्रसन्न रहते हैं।

पाठ – 18

आहार

आहार से शरीर को शक्ति मिलती है। आहार को खूब चबाकर सेवन करने से अच्छी तरह पाचन होता हैं। आहार करने के पश्चात् पाचन क्रिया पूर्ण होने तक आहार करना बंद किया जाता हैं। इससे पाचन अच्छी तरह होता हैं। इसलिए घर में सुबह, दोपहर, शाम एवं रात्रि को भोजन किया जाता है।

मानव के आहार का प्रधान भाग वनस्पति है। इसे प्राणावस्था भी कहते है। वनस्पति के जड़, तना, पत्ती, फूल, फल और बीज इन सभी अंगों का आहार में प्रयोग होता है। कच्चा एवं पकाया हुआ आहार किया जाता हैं।

आहार में दूध का प्रयोग किया जाता हैं। दूध से दही, मठा, माखन, घी एवं कई प्रकार के मिठाई बनती हैं। दुधारू पशुओं को पालकर दूध प्राप्त किया जाता हैं। दुधारू पशु जीव अवस्था में आते हैं।

आहार में नमक एवं जल में प्रयोग किया जाता है। ये पदार्थ अवस्था में आते हैं।

पाठ – 19

औषधि

अनुकूल भोजन, पानी, व्यायाम, विश्राम एवं सफाई से शरीर स्वस्थ रहता हैं। भोजन अनुकूल न होने पर शरीर अस्वस्थ हो जाता हैं। अस्वस्थ शरीर को ठीक करने के लिए अनुकूल आहार, रख–रखाव और औषधि की आवश्यकता होती हैं। अनुकूल की समझ हमें माता, पिता और गुरूजन देते हैं।

अनेक वस्तुएँ औषधि कार्य में उपयोगी होती है। जैसे तुलसी, नीम, हल्दी, गुलाब का फूल, आँवला, नीबु।

सर्दी और खाँसी में तुलसी के पत्ते का रस देते हैं। चर्म रोग में नीम की पत्तियों को पीसकर लगाते हैं। चोट लग जाने पर हल्दी पीसकर लगाते हैं। गुलाब जल को आँख में प्रयोग करते हैं। आँवला और नीबू का उपयोग पेट के रोग में किया जाता हैं।

धनिया, मेथी, अजवाइन, कालीमिर्च जैसे मसाले भी औषधि कार्य में उपयोगी होते हैं। सामान्य घरेलु वस्तुओं जैसे फिटकारी, चूना, नमक भी औषधि कार्य में उपयोगी होता हैं।

अधिक मात्रा में औषधि खाने से शरीर अस्वस्थ हो सकता हैं। माता, पिता, गुरूजी एवं योग्य चिकित्सक औषधि का प्रयोग करते हैं।